लोहिया युवजन ब्रिगेड

का समाजवादी नज़रिया
उसका उद्देश्य और सांगठनिक विधान

प्रथम प्रशिक्षण शिविर

दिनाँक 6 मार्च और 7 मार्च 2010
स्थान : लोहिया आश्रम वरहीं फलपरास जि0 मधुबनी (बिहार)

उद्घाटनकर्ता

श्री देवेन्द्र प्र. यादव, पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार संस्थापक सह संरक्षक, लोहिया, लोहिया युवजन ब्रिगेड

समाजवादी नज़रिया

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में आज हम संक्रमण के जिस दौर से गुज़ रहे हैं उसमें मानवीय जीवन का हर पहलू बड़ी तेजी से बदल रहा है। पिछले कुछ सालों की नाटकीय घटनाओं के साथ एक राजैतिक युग खत्म हो गया है, नया युग अभी अस्पष्टता के कुहासों से ढका है।

मितिहरवा गाँधी आश्रम से आपरेान बिहार शुरू होता है तो एक युवराज का युवाओं को संबोधित करते हुए कथन है कि देश कि चाबी युवाओं के हाथ में है। किस तरह के युवाओं के हाथ में यह प्रश्न यक्ष प्रश्न बना हुआ है? जबकि युवाओं की तादाद देश में लगभग 77 प्रतिशत पहुँच गई है। उसी तरह महाराष्ट्र में ''मराठी मानुष की बात की जा रही है और आर. एस.एस के युवाओं द्वारा नई राष्ट्रवाद, संस्कृति व धर्म संसद की कट्टरपंथी परिकल्पना की जा रही है।''

दूसरी तरफ एक नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का सांचा तैयार हो चुका है। वैचारिक धरातल पर संक्रमण उतना प्रत्यक्ष और नाटकीय नहीं है लेकिन पिछले युग के अनेक आधरभूत विचार धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे हैं, कुछ नये विचार जन्म ले रहे हैं। समाज में ''शराबीकरण'' को सरकारी संरक्षण प्राप्त कराने हेतु गाँव–पंचायत स्तर पर अनुज्ञप्ति (लाईसेन्स) देने की प्रथा चल पड़ी है जिससे बिहार में युवाओं को दिशाहीन बनाया जा सके।

इतिहास का यह दौर अनिश्चय, असमंजस और दुविधा से भरा है, खासतौर पर उस जमात के लिए जिसकी आज भी समाजवाद में आस्था है, जिसने समतामूलक क्रांति का सपना अपने मन में पाला है जिसने आज के माहौल में एक नई आदर्शवादी राजनीती करने की बीड़ा उठाया है, इस जमात का पहला दायित्व है ि कवह नये युग में डॉ. राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और भगत सिंह के विचारों को हम युवा समाजवादियों के लिये धरोहर है। इनके द्वारा प्रतिपादित समाजवादी विचारधारा और प्रशस्त मार्ग को हथियार बनाकर हम सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक विकृतियों विडम्बनाओं एवं आर्थिक विषमताओं, गैरबराबरीयों से संघर्ष करते हुये समातामूलक – शोषण विहिन– समृद्ध देश का नव निर्माण कर सकते हैं।

शहीद ए–आजम भगत सिंह और डॉ. राममनोहर लोहिया सिर्फ दो नाम ही नहीं अपितु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और समाजवादी आंदोलन, वैचारिकी तथा समग्र इतिहास के दो तट एक सागर तल कहा जाय तो गलत नहीं होगा यहां यह भी बड़ा संयोग है कि डॉ. लोहिया और शहीद ए आजम भगत सिंह की जयंती एक ही दिन 23 मार्च को मनाई जाती है। दोनों महापुरूषों की कार्य प्रणाली में भले ही अंतर हो लेकिन वैचारिक धरातल पर उनके मन–मस्तिष्क की संरचना एक सी प्रतीत होती है, दोनों नरौ व कुजरों वाली संशयावस्था से धृणा करते थे।

यही कारण है कि दिसम्बर 1928 की क्रांतिकारीयों की बैठक में नए संगठन के नाम पर चर्चा हो रही थी तो भगत सिंह ने साफ शब्दों में कह दिया कि नए संगठन के नाम में ''सांशलिस्ट'' जरूर होगा ताकि लोगों के मन में संगठन के प्रति कोई संशय न हो। वर्ष 1939 में समाजवादियों ने कांग्रेस के अंदर ही अलग से एक सगठन बनाने की घोषणा की थी जिसका नाम पड़ा था ''कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी'' जिसमें लोक नायक जय प्रकाश नारायण के साथ दर्जनों नेता थो। उस संगठन के नाम में सोलिस्ट शब्द डालने के लिये सर्वाधिक जोर डॉ. लोहिया ने दिया था। डॉ. लोहिया और भगत सिंह दोनों शोषणविहीन, समतामूलक, समाजवादी समाज निर्माण के पक्षघर थे लेकिन जब देश आजाद नहीं हो तब तक सभी सोशलिस्टों का आज़ादी की एकमात्र लक्ष्य था।

यह काम आसान नहीं है। खासतौर पर जबकि भारत और विश्व भर में ऐसा माहौल है मानो प्रति क्रांति का उत्सव चल रहा हो। कल तक दुनिया भर में वैकल्पिक सभयता का प्रतीक मानी जाने वाली सोवियत व्यवस्था ढह चुकी है। बेराजगारी, प्रदूषण, प्राकृतिक साधनों के विनाश और अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक विकृतियों का स्त्रोत होने के बावजूद आधुनिक पूँजीवाद व्यवस्था एक छत्र राज है। इसके पेरोकार ऐसा दम्भ भर रहे हैं कि यही सारी दुनिया की नियति है। इसके एक प्रकार के विरोधियों में हताशा और पराजय का बोध है इतिहास में सच और शुभ की विजय हो सकती है, समाज में आमूल चूल परिवर्तन किये जा सकते है, यह विश्वास अनेक लोगों के मन में डगमगाने लगा है।

इस दौर की पीड़ा अपने देश भारत में और भी गहरी है। आधारभूत सामाजिक परिवर्तन की राजनीति केलिये वामपंथियों सहित सभी राजनीति दल अप्रसांगिक हो चुके हैं। इस शून्य का फायदा उठाकर सत्ताधिकारी वर्ग ''उदारीकरण'' के नाम पर एक ऐसे बेरहम पूँजिवाद का निर्माण कर रहा है, जिसमें आम जनता को पूरी तरह भूला दिया जायेगा।

विश्व के साथ एकीकरण के नाम पर राष्ट्रीय आर्थिक सम्प्रभुता को गिरवी रखने के प्रयास सफल होते दिखाई दे रहे हैं। एक और बौद्धिक सांस्कृतिक गुलामी का शिकंजा कस रहा है, तो दूरी और साम्प्रदायिकता व खोखले राष्ट्रवाद का खतरनाक उभार हुआ है बहुसंख्यक आबादी को प्रज्ञा सिंह, पुरोहित पाण्डा जैसे कुल्षित बुद्धिवाले ग्रुप ने भ्रमित कर आतंकवादी बनाने हेतु ''अभिनव भारत'' की रिहर्सल तक करने में देर नहीं की और अभी इसे देश के कट्टरपंथी विचारधारा वाले लोग सफल करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

जिन अरमानों को लेकर आजादी हासिल की गई थी, वे हमसे दिन व दिन दूर खिसकते जा रहे हैं।

लेकिन निराशा की इस घड़ी में यह निष्कर्ष निकालना बिल्कुल गलत होगा कि नये युग में समता और क्रांति के मूल्य प्रासंगिक नहीं हैं, समाजवादी आंदोलन की गंजाइश नहीं है। इतिहास के इसी दौर में सार्वजनिक जीवन के जन तंत्रीकरण की प्रक्रिया गहरी हुई है, जिसका क्रांतिकरण अनिवार्य है। स्थापित व्यवस्था से लड़ने के वैचारिक–सांस्कृतिक औज़ार और भी पैने हुये हैं। अपने देश में स्थापित राजनीति के तौर–तरीकों से सही अल्पसंख्यक दलित–शूद्र चेतना का अभूतपूर्व जागरण हुआ है। आम लोगों की जनतांत्रिक आकांक्षाओं का

विस्फोट हुआ है। साथ ही स्थापित राजनीति को चुनौती देने वाले जनांदोलनों का उभार भी हुआ है। संक्रमण के इस दौर में यह स्वाभाविक है कि सबका ध्यान उस पर केन्द्रित होगा, जो टूट रहा है, जो खण्डित हो चुका है, न कि उस पर जो बच गया है, जो जन्म ले रहा है। किन्तु जैसे जैसे प्रतिक्रांति के उत्सव से उठा गुबार छँट रहा है, वैसे वैसे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि एक नये समाजवादी आंदोलन के अनेक सूत्र आज हमारे सामने हैं। इस सूत्रों के जरियें क्रांतिधर्म को परिष्कृत करने और उसे भारतीय संदर्भ में पुनः परिभाषित करने का अभूतपूर्व अवसर हमारे हाथ में हैं।

इस सूत्रों का पहला स्त्रोत पिछले युग की क्रांतिकारी विचारधारा व राजनीति की समृद्ध विरासत का है। समाजवादी आंदोलन और वैचारिक परंपरा की विभिन्न धाराओं ने एक सामाजिक संवेदनशीलता का निर्माण किया, जिसने अन्य विचारधाराओं और आंदोलनों को गहरे तौर पर प्रभावित किया। यह संवेदनशीलता आज भी प्रासंगिक है। नये संदर्भ में इसके सगुण स्वरूप को नये सिरे से निरूपित करने पर यह नयी क्रांतिकारिता का आधार बन सकती है।

दूसरा प्रमुख स्त्रोत है समाजवादी राजनैतिक परम्परा के बाहर पैदा हुए उन विचारों का, जिनका पिछले कुछ दशकों में राजनीतिकरण्या और क्रांतिकरण हुआ है। इनमें से नारी मुक्ति आंदोलन की वैचारिक विरासत, पर्यावरण रक्षा के सिद्धांत, गाँधी विचार और महात्मा फूले, डॉ. भीमराव अंबेडकर की वैचारिक परम्परा का जिक्र करना ज़रूरी है।

तीसरा प्रमुख स्त्रोत है पिछले दशकों में जनादोंलनों ने आम लोगों की जनतांत्रिक मांगों को मुखरित किया, उसमें अंतर्निहित क्रांतिकारी चेतना का आदर किया, उनके जीवंत अनुभवों के आधार पर अपने सिद्धांत बनाये। ज़ाहिर है इन जनांदोलनों से उपजा विचारपुंज किसी शास्त्रीय विचारधारा की तरह सुव्यस्थित नहीं है, लेकिन इसी कारण से इसमें एक खुलापन है। अनुभवजन्य आदर्शों, सिद्धांतों व कार्यक्रमों के उदय को हम नये युग में क्रांतिधर्म को परिभाषित किया जा सकता है। किन्तु यह प्रक्रिया केवल वैचारिक नहीं होगी। क्रांति के सिद्धांत क्रांतिकारी राजनीति करते हुए ही गढ़े जा सकते हैं। इसमें काफी समय भी लग सकता है। हमें किताबी सिद्धांतों और बनी–बनाई विचारधारा का मोह छोड़कर अनिश्चत और अधूरेपन के साथ आगे बढ़ना होगा। नया क्रांतिधर्म स्वीकार करने का अर्थ इस प्रक्रिया से निकले विचारों को स्वीकार करना जैसे आज और कल तक यहाँ आयोजित ''प्रशिक्षण शिविर'' में जो विचार निकलेगें इसे आगे भी ईमानदारी व प्रतिबद्धता से चलाते जाना।

आज भी समाजवाद का आदर्श वह ज्योतिपुंज है जिसके प्रकाश में इम एक नये क्रांतिधर्म की खोज शुरू कर सकते हैं, किन्तु इस खोज को आगे बढ़ाने के लिए हमें इस आदर्श की नये सिरे से व्याख्याा करनी होगी, समता की अवधारणा की पुनः परिभाषा करनी होगी, इससे जुड़ी अनेक प्रचलित मान्यताओं को बदलना होगा, समतामूलक समाज के मूर्त स्वरूप को नये सिरे से निरूपित करना होगा, क्रांति की पुनव्यवाख्याा करनी होगी और उसके मार्ग व औजारों पर पुर्नविचार करना होगा।

समता की अवधारणा को अकसर आधुनिक सभ्यता के संदर्भ में परिभाषित किया गया है। इस प्रचलित समझ के अनुसार समता का अर्थ है गरीबी हटाना या सभी व्यक्तियों में आर्थिक

बराबरी कायम करना, और इसके लिए जरूरी है सारे समाज की सुख–सुविधाओं में निरंतर बढ़ोतरी। इस संकुचित अर्थ में समाज आज के क्रांतिधर्म का आदर्शमूल नहीं हो सकती है।

जीवन की भौतिक सुख–सुविधाओं में गैरबराबरी को खत्म करना बेशक जरूरी है। कई मायनों में यह जीवन के अन्य पक्षों में समता की स्तापना के लिए अनिवार्य शर्त भी है। लेकिन अपने आप में यह अपर्याप्त है। आज समता को एक व्यापक और गहरे अर्थ में समझना होगा। दुनिया में प्रचलित हर–तरह की अन्यायपूर्ण गैर बराबरी– चाहे वह नर–नारी के बीच हो या गोरे–काले के बीच हो जाति पर आधारित हो अथवा नस्ल या सम्प्रदाय पर, राष्ट्र के भीतर हो या राष्ट्रों के बीच को मिटाना समता के आदर्श का अभिन्न अंग है। लेकिन सब तरह के शोषण समाप्त हो जाने पर भी एक आदर्श समतामूलक समाज की स्थापना नहीं हो जाएगी। अपने व्यापक अर्थ में समता एक सांस्कृतिक मूल्य है, एक जीवन दृष्टि है। इसके मूल में समदृष्टि यानि अपने समान की दूसरों को समझना, सबके स्वत्व का आदर और सबके लिए स्नेहभाव इसमें निहित है। स्वयं अपने आचार–विचार को संयमित, स्थिर व संतुलित रखना भी इसी आदर्श की मांग है। यानि समता के आदर्श में एक समग्रता है जिसमें समानता, समत्व, समदृष्टि, सम्मान व सम्पति अन्तर्निहित है। इस तरह देखने पर समता और स्वतंत्रता या समता और बंधुत्व एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। समता न्यान का मूल है और स्वार्थ का विलोम केवल अपना हित साधने के लिए दूसरों के विरूद्ध आक्रामकता समता विरूद्ध है। उपभोक्तावादी सभ्यता द्वारा असीमित इच्छाओं की पूर्ति की ऊंची दौड़ समृद्धि की आधुनिक अवधारणाएँ और उनपर आधारित आर्थिक विकास के मॉडल भी समता विरोधी हैं।

समता और आधुनिकता को जोड़कर देखने के कारण अतीत के हर पहलू या परम्परा के विरोध को क्रांतिकारी माना जाता रहा है। प्रगति की यूरोपीय अवधारणा को समता को अनिवार्य अंग मान लेने से यह पूर्वाग्रह और भी मजबूत हुआ। एक नये युग का क्रांतिधर्म समझने के लिए इस पूर्वाग्रह से मुक्त होना ज़रूरी है। मानव समाज सदैव परम्पराओं में जीता है। आधुनिकता स्वयं एक परम्परा है। परम्परा कभी एक स्वर में मुखरित नहीं होती, इसकी सदैव एक से अधिक धाराएँ होती है, बेशक वर्तमान समाज के अधिकांश समता विरोधी आचार–विचार की बुनियाद में हमारी परम्पराएँ है, लेकिन उनका विरोध करने के प्रेरणा–सूत्र भी हमें परम्पराओं में मिलते हैं। संपूर्ण परम्परा–समर्थन की तरह सम्पूर्ण परम्परा विरोध भी एक विकृति है जो हमें अपने अतीत से स्वस्थ सम्बन्ध बनाने में बाधक है– आने वाली पीढ़ियों की कीमत कर अपना ''विकास'' करने की प्रवृति इसी विकृति का उदाहरण है। समतामूलक समाज की स्थापना के लिए ज़रूरी है कि हम अतीत से सीखे और भविष्य का संरक्षण करें।

इसी से जुड़ा एक और आधुनिक पूर्वाग्रह है। उन्नीसवीं शताब्दी के समाजवादी चिंतन ने इस विचारधारा को सर्वदेशीय स्वरूप में प्रस्तुत किया और इसे अंतर्राष्ट्रीयतावाद आदर्श से जोड़ा लेकिन इस आग्रह के चलते स्थानीयता के किसी भी स्वरूप को संकीर्णता का प्रतीक मानकर उसे समता औश्र माननीय एकता का विरोधी समझा जाने लगा। यह पूर्वाग्रह आज भी कायम है और यह तीसरी दुनिया में क्रांतिकारी की संभावनाएँ चिन्हित करने में एक प्रमुख बाधा है। वास्तव में गांव, समुदाय या राष्ट्र जैसी एक छोटी इकाई के प्रतिलगाव अपने आप में संकीर्णता नहीं है और एक बड़ी इकाई के प्रति निष्ठा अपने आप में उदारता की ध्योतक नहीं है। असली बात इकाई का बड़ा या छोटा होना नहीं है, मन का बड़ा या छोटा होना है निष्ठा का स्वरूप

संकीर्ण या उदार होना है। स्थानीयता अपने–आप में समता–विरोधी नहीं है। स्वाभिमान और आत्मविश्वास से उपजी स्थानीयता के जरिये ही समता के आदर्श को मूर्त स्वरूप दिया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय एक अनुकरणीय आदर्श हैं। किन्तु सच्ची अंतर्राष्ट्रीयता सभी छोटी ईकाईयों से लगाव और उनकी अस्मिता मिटाकर नहीं, बल्कि उन्हीं अस्मिताओं के सहज विस्तार के जरिये आएगी। आज के विश्व में अंतर्राष्ट्रीयता नाम पर समरूपता लाने के प्रयास समता–विरोधी है। जब तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गैर–बराबरी रहेगी, राष्ट्रवाद एक सकारात्मक राजनैतिक शक्ति और विचार के रूप में प्रासंगिक रहेगा। लेकिन राष्ट्रवाद के नाम पर राष्ट्र के भीतर विविधताओं को खत्म कर समरूपीकरण के प्रयास भी समता–विरोधी है। शक्तिहीन समूहों द्वारा स्थानीय पहचान व सामुदायिक सम्मान के लिए चलाये जा रहे संघर्ष समतामूलक आंदोलन का ही एक स्वरूप है।

समता के आदर्श की पुर्नवस्था के साथ्ज्ञ–साथ इस आदर्श तक पहुंचने के रास्ते और औजारों पर भी पुर्नचिन्तन करना जरूरी है। इसके लिए क्रांति की स्थापित अवधारणा को बदलना जरूरी है। क्रांति के मूल में गति और उत्कर्ष का विचार है। सामाजिक सन्दर्भ में क्रांति का अर्थ है समाज में गतिशीलता को बढ़ावा देकर उसमें आधारभूत परिवर्तन। किन्तु इस परिवर्तन के लिए हिंसक विप्लव अनिवार्य नहीं है। दरअसल बीसवीं शताब्दी का इतिहास साफ तौर पर यह दर्शाता है कि हिंसक विप्लव के द्वारा लाये गये परिवर्तन अस्थायी और दिग्भ्रमित होते हैं। उनसे यह गतलफहमी फैलती है कि सत्ता परिवर्तन की क्रांति है, जनता के विचार–परिवर्तन के प्रयास की उपेक्षा होती है और अंततः हिंसा नयी व्यवस्था का अनिवार्य अंग बन जाती है। गहरे और स्थायी परिवर्तन गैर– हथियारबंद तरीकों से ही लाये जा सकते हैं, विशेषतः हमारे देश भारत जैसे समाज में जहां लोकतांत्रिक व्यवस्था मौजूद है। समाज में आधारभूत परिवर्तन एकाएक नहीं हो सकते। इसलिए क्रांति की कल्पना हमेशा एक बड़ी घटना के रूप में करना गलत होगा। क्रांति मानव जीवन की सामुदायिक संभावनाओं में विचार की प्रक्रिया का नाम है।

क्रांतिकारी रास्तों और औजारों के बारे में सोचते वक्त यह मान लिया जाता है कि वे परम्परागत अर्थ में राजनैतिक होंगे। इसलिये क्रांतिकारी समूह..... चाहे वह हिंसा में विश्वास करें या अहिंसा में सन्तोन्मुख राजनीति को अपना प्रमुख काम मानते हैं। आज इस मान्यता को भी बदलने की जरूरत है। केवल शक्ति और सत्ता उन्मुख राजनीति के जरिये समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं लाये जा सकते। हम राजनीत को एक व्यापक अर्थ में परिभाषित करना जरूरी समझते हैं।

इस अर्थ में क्रांतिकारी राजनीति का मतलब सरकार या राज्य के विरूद्ध संघर्ष चलाकर उसी राज्य सत्ता को हासिल करना भर नहीं हो सकता। सत्ता की चुनावी राजनीति की अपनी अहमियत है। कोई भी क्रांतिकारी समूह इसे पूरी तरह नजरअंदाज नहीं कर सकता। लेकिन हिंसक विप्लव की तरह चुनावी परिवर्तन भी अस्थायी और छिछले होते हैं। केवल चुनावी राजनीति करने से भी क्रांतिकारी समूह दिग्भ्रमित होते हैं और जनमानस की उपेक्षा करते हैं।

इसलिये हम यह समझते हैं कि सत्ता की रजानीति तभी सार्थक हो पायेगी जब इसे व्यापक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के संघर्ष और रचनात्मक कर्म से जोड़ा जाए। आज के युग में क्रांतिकारी को धर्म–संस्कृति और ज्ञान विज्ञान से जीवंत और सृजनात्मक संबंध बनाये रखना होगा यानि इस व्यापक अर्थ में क्रांतिकारी राजनीति ''लोहिया युवजन ब्रिगेड'' के द्वारा करके ही हम समता के समग्र आदर्श तक पहुँच सकते हैं। इसी नेक उद्देश्य से आज यहाँ ''लोहिया युवजन ब्रिगेड'' के द्वारा करके ही हम समता के समग्र आदर्श तक पहुँच सकते हैं। इसी नेक उद्देश्य से आज यहाँ ''लोहिया युवजन ब्रिगेड की स्थापना'' प्रशिक्षण शिविर आयोजित की गई है।

'लोहिया युवजन ब्रिगेड' अपने देश समाजवादी आंदोलन और उसके बाद उभरे जनान्दोलनों की वारिस होने के नाते स्थापित राजनीति के ढर्रे से अलग हटकर भारतीय राजनीति की लोकतांत्रिक धारा को मजबूत करने के लिए कृत संकल्पित रहेगा आज विकल्प के नाम पर स्थापित राजनीति के ही विकल्प है ऐसे में ''लोहिया युवजन ब्रिगेड' एक जमीनी वैकल्पिक राजनीति को स्थापित करने की चुनौती को स्वीकार करती है।

इस नाते हमारी जिम्मेवारी बनतीहै कि हम वर्तमान राजनैतिक ढाँचे का अधिक से अधिक लोकतांत्रिक करें। यह तभी संभव हो पायेगा, जब हमारी राजनीति ठोस राजनैतिक कर्मपर आधारित हो, एक जीवंत रिश्ते से बंधी हो। लेकिन लोहिया युवजन ब्रिगेड का दीघकालीन लक्ष्य केवल स्थापित राजनैतिक ढाँचे में सत्ता का न्यायपूर्ण बँटवारा ही नहीं है। बल्कि केन्द्रीकरण और समरूपीकरण पर आधारित आधुनिक राजनैतिक ढाँचे की जगह एक विकेन्द्रित और विविधता संपन्न यानि अनेकता में एकता सम्पन्न लोकतांत्रिक ढाँचे का निर्माण लोहिया युवजन ब्रिगेड का दीर्घकालिक लक्ष्य है।

संगठनिक विधान

(क) तत्कालिक ढांचा का स्वरूप निम्न प्रकार रहेगा।

1) जिला स्तर में प्रदेश स्तर तक 11 सदस्यीय दस्ता रहेगा।

2) प्रखण्ड स्तर से पंचायत में भी 11 सदस्यीय दस्ता रहेगा।

3) गांव स्तर पर 5 सदस्यीय दस्ता गठन होगा।

4) इन सभी स्तर पर एक चीफ होंगे जो संचालन कार्य देखेंगें।

5) संगठन में पदाधिकारियों की कार्यकर्त्ताओं की प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए कायदे–कानून बनाये जायेंगें।

6) संगठन के नेतृत्व में ऊपर जाने की प्रक्रिया और मर्यादा निर्धारित की जायेगी।

7) संगठन में पदों और पदाधिकारियों को अनावश्यक महत्व न मिले, इसलिये पदों की संख्या बहुत सीमित रहेगी और 'एक पद पर एक व्यक्ति' के सिद्धान्त को बिना अपवाद लागू किया जायेगा।

8) सदस्यता की शर्तें

अ) काई भी युवजन 18 वर्ष की उम्र पूरी कर चुका है लोकशाही, समाजवाद और संगठन के उद्देश्य–नीति और कार्यक्रम के प्रति आस्था एवं विश्वास रखता हो, लोहिया युवजन ब्रिगेड का सदस्य बन सकता/सकती है।

आ) संगठन का सदस्य किसी ऐसे संगठन का सदस्य नहीं हो सकता, जिसका उद्देश्य विचार, नीति व कार्यक्रम समाजवादी आदर्श की मान्यता के विरूद्ध हो।

ख) संगठन का बैंक खाताः

बैंक खाता ब्लाक/नगर/जिला/राज्य/स्तर पर चीफ और कोषाध्यक्ष के संयुक्त हस्ताक्षर से चलाया जायेगा।

ग) राज्य परिषद निम्नाकिंत विषयों पर नियम बनायेगी अनुशासन, आचार संहिता, सांगठनिक चुनाव

आचार संहिता (लोहिया युवजन ब्रिगेड के प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य होगा)

1) किसी भी प्रकार की व्यक्ति पूजा को संगठन में प्रतिबंधित किया जायेगा।

2) छूआछूत का किसी भी रूप में व्यवहार नहीं करेगा।

3) जाति आधारित गलियों का प्रयोग नहीं करेगा।

4) दबी हुई जातियों को छोड़कर किसी भी अन्य जाति विशेष संगठन की सदस्यता स्वीकार नहीं करेगा।

5) दहेज नही लेगा।

6) औरत की पिटाई नहीं करेगा और न औरत (नारी) विरोधी गालियों का व्यवहार करेगा।

7) धार्मिक या सांप्रदायिक द्वेष फैलाने वाली किसी भी गतिविधि में शामिल नहीं होगा।

8) सदस्यता ग्रहण/नवीकरण के समय अपनी व्यक्तिगत संपति व आय की घोषण करेगा।

9) अपनी व्यक्तिगत आय का काम से कम एक प्रतिशत नियमित रूप से लोहिया युवजन ब्रिगेड को देगा।

10) विधायक या सांसद चुने जाने पर अपनी सुविधाओं का उतना अंश लोहिया युवजन ब्रिगेड को देगा जो राज्य परिषद लोहिया युवजन ब्रिगेड द्वारा तय किया जायेगा।

उर्पयुक्त आचरण संहिता के प्रावधान को न मानना।

लोहिया युवजन ब्रिगेड की न्यूनतम कसौटी का उल्लंघन माना जायेगा और राज्य परिषद् लोहिया युवजन ब्रिगेड द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार अनुशासत्मक कार्यवाही या आधार होगा।

मर्यादा सूत्रः

इसके अतिरिक्त 'लोहिया युवजन ब्रिगेड' के प्रत्येक सदस्य से अपेक्षा की जायेगी कि वह

1. अपनी घर–गृहस्ती के दैनदिन श्रम प्रधान काम में नियमित रूप से हाथ बढाऊँगा।
2. फिजूलखर्ची, विलासिता और आडम्बरपूर्ण जीवन न जीयेगा।

स्पष्टीकरणः जहाँ कहीं जरूरत हो 'आचार संहिता' और 'मर्यादा सूत्र' के प्रावधानों का खुलासा करने का अधिकार राज्य परिषद लोहिया युवजन ब्रिगेड का होगा।